ASSOCHAM IN THE NEWS

D.N.A.

3 October, 2017

Most women unaware of their safety rights: Survey

DNA Correspondent
correspondent@dnaindia.net

New Delhi: An ASSOCHAM survey of women in major cities across India has revealed that majority of women are not aware of the Constitutional provisions laid down for their safety, which are more than 20 in number. These include over 88 per cent of the respondents in Delhi and the National Capital Region alone.

The survey was conducted by the ASSOCHAM Social Development Foundation (ASDF) among 2,500 working women, home-makers and college-going girls in the NCR and in cities like Bangalore, Mumbai, Hyderabad, Ahmedabad, Kolkata, Pune. The study also revealed that anxiety level increases among the women as darkness falls, with increasing cases of violence against women.

"Similar anxiety is more among the guardians of those women who travel by chartered buses, cabs, autos etc. Working women have to battle day in and day out in chartered buses, cabs, autos without knowing whether

For representation

their drivers and crew members have been verified by the police or not," said a release by ASSOCHAM. The study also reveals that respondents

> **The significance of women as an important human resource was recognised by the Constitution... but not many women are aware of it**
>
> **ASSOCHAM,**
> survey report

work late in sectors like BPOs, and IT-enabled services, travel and tourism, nursing homes, and media, among others, feel more vulnerable.

Over 53 per cent of the respondents in the Delhi-NCR have migrated from states such as Uttar Pradesh, Bihar, Rajasthan, Madhya Pradesh, etc., in search of work, education of children among other reasons.

"The significance of women as an important human resource was recognised by the Constitution, which not only accorded equality of women but also empowered the state to adopt measures of positive discrimination in their favour," the report stated.

Some of the suggestions the ASDF made include self-defence training for women.

The Free Press Journal 3 October, 2017

ASSOCHAM bats for relaxation in fiscal deficit target

NEW DELHI: Amidst concerns over slowdown in growth due to the transient disruptions in the economy following the implementation of the Goods and Services Tax (GST)and the remaining over-hang of demonetisation, India Inc is looking up to the government to take a few 'out of ordinary' steps like relaxation of the fiscal deficit targets and increase in public spending to boost investment –led growth that would lead to more jobs and revival in consumer demand, the ASSOCHAM said in its recommendations to the government.

Navbharat Times 3 October, 2017

एसोचैम की रिपोर्ट : बेतहाशा अपराधों ने तोड़ा महिलाओं का कॉन्फिडेंस

बाहर निकलने में घबराने लगी हैं अब

■ विशेष संवाददाता, नई दिल्ली

देश में महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटनाओं में बढ़ोतरी ने कामकाजी महिलाओं और उनके परिवारों के आत्मविश्वास को हिलाकर दिया है। महिलाओं के साथ उनके परिवार वाले भी देश में महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न के बढ़ते मामलों से चिंतित हैं। ये बातें एसोचैम सोशल डिवेलपमेंट फाउंडेशन (एएसडीएफ) द्वारा तैयार एक स्टडी रिपोर्ट में कही गई हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत में महिलाएं अब रात को बाहर जाते समय घबराने लगी हैं। जैसे ही शाम हो जाती है, उनकी चिंता का स्तर बढ़ जाता है। इसी तरह की चिंता उन महिलाओं के अभिभावकों के बीच है जो चार्टर्ड बस, कैब, ऑटो आदि से यात्रा करती हैं। कामकाजी महिलाओं को दिन में और रोजाना बसों, टैक्सी, ऑटो में संघर्ष करना पड़ता है। उनको यह नहीं पता होता कि जिन बसों, ऑटो या टैक्सी से वे सफर कर रही हैं उनके ड्राइवर या अन्य स्टाफ का पुलिस वेरिफिकेशन हुआ है या नहीं।

यह स्टडी रिपोर्ट दिल्ली-एनसीआर की करीब 2500 ऐसी महिलाओं से बात करके तैयार की गई है, जो दिल्ली-एनसीआर सहित बेंगलुरु, मुंबई, हैदराबाद, अहमदाबाद, अहमदाबाद, कोलकाता, पुणे जैसे शहरों में पढ़ाई या कामकाज के लिए घरों से बाहर निकलकर सफर करती हैं।

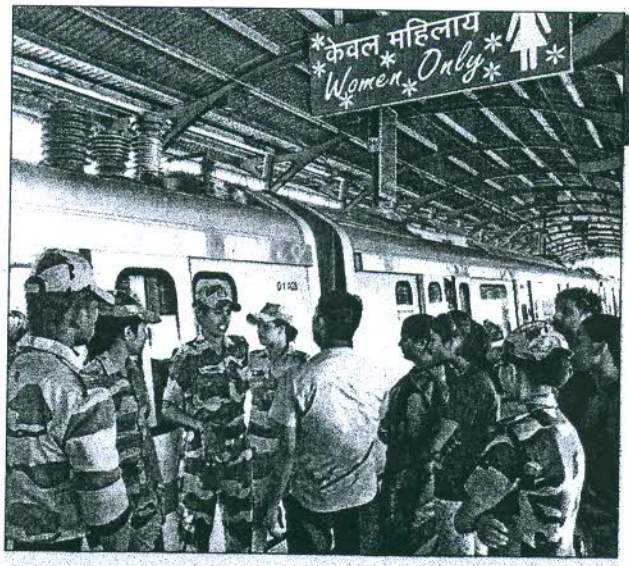

> हमें स्थिति सुधारनी होगी। भारत में महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे देश की छवि खराब हो रही है। विदेशी पर्यटक, विशेष रूप से विदेशी महिला पर्यटक अकेली भारत आने से घबराती हैं। ऐसे में हम कैसे कह सकते हैं कि हमारा देश वह देश है जहां पर अतिथि को भगवान का दर्जा दिया जाता है।
>
> -डीएस. रावत, डायरेक्टर जनरल, एसोचैम

नाइट शिफ्ट करने में ज्यादा परेशानी

रिपोर्ट के मुताबिक, देश में अपराध करने वालों को कानून का भय होना चाहिए, मगर हमारे देश में ऐसा नहीं है। वे कामकाजी महिलाएं बढ़ते अपराध से ज्यादा परेशान हैं जो खासकर बीपीओ और आईटीईएस, टूर एंड ट्रैवलिंग, नर्सिंग होम, मीडिया जैसे क्षेत्रों में काम करती हैं। इन महिलाओं को देर रात तक काम करना होता है। वे जब देर रात घर आती हैं तो उन्हें अपने साथ किसी अनहोनी की आशंका डराए रखती है और उन्हें अतिरिक्त सतर्कता बरतनी पड़ती है।

सर्वे में शामिल 60 प्रतिशत से ज्यादा महिलाओं का कहना था कि वे कामकाज या पढ़ाई के लिए दूसरे प्रदेशों में जाती हैं। मगर जिस देश में महिलाएं इतनी अधिक असुरक्षित हैं, उससे प्रशासन तंत्र पर सवाल उठना स्वाभाविक है। इसका मतलब है कि जो प्रशासनिक स्तर पर बैठे हैं, वह सही तरीके से अपने काम को अंजाम नहीं दे रहे हैं। महिलाओं ने बढ़ते अपराध के लिए राजनीति को भी दोष दिया है। जब भी महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न जैसी घटनाएं होती हैं तो राजनीति इसके आड़े आ जाती है। अपराधियों के हौसले इससे बुलंद हो जाते हैं।

Virat Vaibhav 3 October, 2017

महिलाओं के यौन उत्पीड़न की घटनाएं चिंताजनक

एजेंसी ■ नई दिल्ली

यौन उत्पीड़न के बढ़ते मामलों को लेकर चिंता जताते हुए उद्योग संगठन एसोचैम ने सोमवार को कहा कि इस तरह के अपराधों को अंजाम देने की फितरत रखने वाले लोगों के मन में डर भरने की जरूरत है। एसोचैम सोशल डेवलपमेंट फाउंडेशन (एएसडीएफ) द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया, देश में महिलाओं के यौन उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं से ना केवल महिलाओं का बल्कि उनके परिवारों का भी भरोसा हिलता है। इसमें कहा गया कि महिलाओं को चार्टर्ड बसों, टैक्सियों, ऑटोरिक्शा में हर दिन सफर करना पड़ता है जबकि उन्हें पता नहीं होता कि चालक और चालक दल के सदस्यों का पुलिस से सत्यापन हुआ भी है या नहीं। नृशंस अपराध को अंजाम देने की फितरत रखने वाले लोगों में डर की भावना भरनी चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार 2,500 महिलाओं में किए गए सर्वेक्षण में पता चला कि उन्हें बीपीओ और आईटी सेक्टर, यात्रा एवं पर्यटन, नर्सिंग होम और मीडिया सहित अन्य क्षेत्रों में देर रात तक काम करना पड़ता है। पेपर में कहा गया कि बड़ी कंपनियों के कैब, जो जीपीएस से लैस होते हैं, को सुरक्षित समझा जाता है, बढ़ती घटनाओं से यह भरोसा डगमगाया है।

2,500 महिलाओं में किए गए सर्वेक्षण में पता चला कि उन्हें बीपीओ और आईटी सेक्टर, यात्रा एवं पर्यटन, नर्सिंग होम और मीडिया सहित अन्य क्षेत्रों में देर रात तक काम करना पड़ता है।

एसोचैम के महासचिव डी एस रावत ने कहा, अगर विश्वास बहाली के लिए तत्काल उपाय नहीं किए गए तो उत्तर भारत में पर्यटन मौसम के बीच पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र पर गंभीर असर पड़ सकता है। इन उपायों में मुख्य रूप से कानून व्यवस्था से जुड़े उपाय शामिल हैं।

Hari Bhoomi 3 October, 2017

महिलाओं के यौन उत्पीड़न की घटनाएं चिंताजनक: एसोचैम

नई दिल्ली। यौन उत्पीड़न के बढ़ते मामलों को लेकर चिंता जताते हुए उद्योग संगठन एसोचैम ने आज कहा कि इस तरह के अपराधों को अंजाम देने की फितरत रखने वाले लोगों के मन में डर भरने की जरूरत है। एसोचैम सोशल डेवलपमेंट फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया, ''देश में महिलाओं के यौन उत्पीड़न की बढ़ती घटनाओं से ना केवल महिलाओं का बल्कि उनके परिवारों का भी भरोसा हिलता है।'' महिलाओं को चार्टर्ड बसों, टैक्सियों, ऑटोरिक्शा में हर दिन सफर करना पड़ता है जबकि उन्हें पता नहीं होता कि चालक और चालक दल के सदस्यों का पुलिस से सत्यापन हुआ भी है या नहीं। नृशंस अपराध को अंजाम देने की फितरत रखने वाले लोगों में डर की भावना भरनी चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार 2,500 महिलाओं में किए गए सर्वेक्षण में पता चला कि उन्हें बीपीओ और आईटी सेक्टर, यात्रा एवं पर्यटन, नर्सिंग होम और मीडिया सहित अन्य क्षेत्रों में देर रात तक काम करना पड़ता है। बड़ी कंपनियों के कैब, जो जीपीएस से लैस होते हैं, को सुरक्षित समझा जाता है, बढ़ती घटनाओं से यह भरोसा डगमगाया है।